CPC, 1908



PART 07

सिविल प्रक्रिया संहिता The Gode of Civil Procedure Section 9-10 Res Subjudice



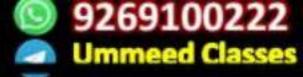


WELCOME UMINIED CLASSES

Like Video and Subscribe our channel







Section 9: Courts to try all civil suits unless barred जब तक कि वर्जित न हो, न्यायालय सभी सिविल वादों का विचारण करेंगे

The Courts shall (subject to the provisions herein contained) have jurisdiction to try all suits of a civil nature excepting suits of which their cognizance is either expressly or impliedly barred.

न्यायालयों को (इसमें अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधीन रहते हुए) उन वादों के सिवाय, जिनका उनके द्वारा संज्ञान अभिव्यक्त या विवक्षित रूप से वर्जित है, सिविल प्रकृति के सभी वादों के विचारण की अधिकारिता होगी।

UMMEED



Section 9

Explanation I--A suit in which the right to property or to an office is contested is a suit of a civil nature, notwithstanding that such right may depend entirely on the decision of questions as to religious rites or ceremonies.

स्पष्टीकरण 1- वह वाद, जिसमें सम्पत्ति सम्बन्धी या प्रद-सम्बन्धी अधिकार प्रतिवादित है, इस बात के होते हुए भी कि ऐसा अधिकार धार्मिक कृत्यों या कर्मों सम्बन्धी प्रश्नों के विनिश्चय पर पूर्ण रूप से अवलम्बित है, सिविल प्रकृति का वाद है।

Explanation II -For the purposes of this section, it is immaterial whether or not any fees are attached to the office referred to in Explanation I or whether or not such office is attached to a particular place.

स्पष्टीकरण 2 - इस धारा के प्रयोजनों के लिए यह बात तात्विक नहीं है कि स्पष्टीकरण 1 में निर्दिष्ट पद के लिए कोई फीस है या नहीं अथवा ऐसा पर किसी विशिष्ट स्थान से जुड़ा है या नहीं।]

UMMEED





8-9 2 Explaination.

Civil court

J

try

all civil suits

unless

implilly

Party Cause of cause

barred.



Section 10: Stay of Suit वाद का रोक दिया जाना

ResSubjudice

No Court shall proceed with the trial of any suit in which the matter in issue is also directly and substantially in issue in a previously instituted suit between the same parties, or between parties under whom they or any of them claim litigating under the same title where such suit is pending in the same or any other Court in [India] have jurisdiction to grant the relief claimed, or in any Court beyond the limits of [India] established or continued by [India] established or continued by [India] like jurisdiction, or before [India] Supreme Court].

पक्षकारों के बीच के, जिनसे (व्युत्पन्न अधिकार के अधीन वे या उनमें से कोई दावा करते हैं, किसी पूर्वतन संस्थित वाद में भी प्रत्यक्षतः और सारतः विवाद्य है, आगे कार्यवाही नहीं करेगा जहां ऐसा वाद उसी न्यायालय में या भारत में के किसी अन्य ऐसे न्यायालय में, जो दावा किया गया अनुतोष देने की अधिकारिता रखता है या भारत की सीमाओं के परे वाले किसी ऐसे न्यायालय में, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित किया गया है या चालू रखा गया है और वैसी ही अधिकारिता रखता है, या उच्चतम न्यायालय के समक्ष लिम्बत है।



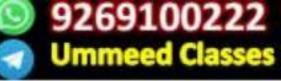


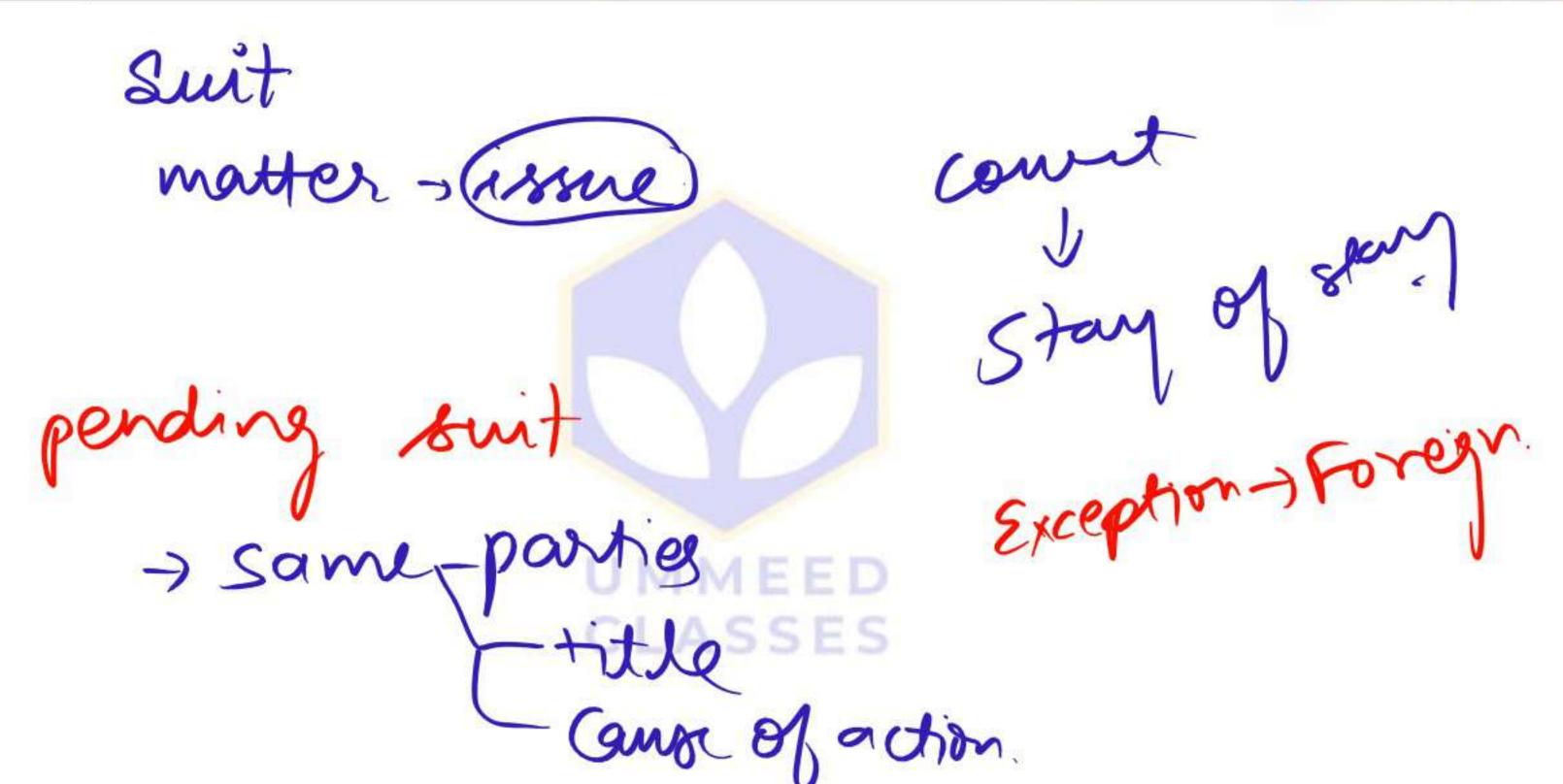
Section 10: Stay of Suit वाद का रोक दिया जाना

Explanation.--The pendency of a suit in a foreign Court does not preclude the Courts in 1[India] from trying a suit founded on the same cause of action.

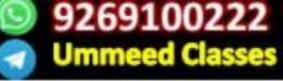
स्पष्टीकरण - विदेशी न्यायालय में किसी वाद का लम्बित होना उसी वाद-हेत्क पर आधारित किसी वाद का विचारण करने से भारत में के न्यायालयों को प्रवारित नहीं करता।











Part-1 Suits in general [9-35B]

-) +> Jurisd of Court & Res juickicato (9-14) 2) Place of swing att ost 50 Lent (15-25) 1 3) Institution of suit one aftern 1341 vira) (26)
 4) Summon & Discovery war sit Asserts (27-32)
 5) Judgman and decree (2012) 1513 (33) 6) Interest early (34) SES
- 7) Costs 20-4 (35-35B)







